

# विचित्र सर्जरी से मधुमेह का इलाज

हाल ही में प्राप्त शोध परिणाम दर्शाते हैं कि पेट की शल्य क्रिया करके वयस्कों में होने वाले मधुमेह पर नियंत्रण किया जा सकता है। वास्तव में यह सर्जरी मोटापा कम करने के लिए की जाती है मगर इससे मधुमेह (किस्म-2) के उपचार में भी मदद मिलने के समाचार हैं।

उपरोक्त सर्जरी में छोटी आंत का शुरुआती हिस्सा (डुओडेनम) हटा दिया जाता है। परिणाम यह होता है कि भोजन आमाशय से सीधा छोटी आंत के मध्य भाग में पहुंचता है। इसके चलते आंतों को कैलोरी का अवशोषण करने का कम समय मिलता है और मोटापा कम होने लगता है। इस सर्जरी को *डुओडेनम निष्कासन* कहते हैं। सर्जन्स यह देखते रहे हैं कि यदि मरीज़ मोटापे और मधुमेह दोनों से पीड़ित है तो *डुओडेनम निष्कासन* के बाद 98 प्रतिशत मामलों में मधुमेह से भी मुक्ति मिल जाती है। और यह भी देखा गया है कि मधुमेह से यह मुक्ति वज़न घटने से पहले ही शुरू हो जाती है। अब इटली, ब्राज़ील और फ्रांस के डॉक्टरों ने यह सर्जरी ऐसे मधुमेह मरीज़ों पर की है जो मोटापे के शिकार नहीं थे। ऐसे 7 मरीज़ों में से 2 ने तो अब मधुमेह की दवाइयां लेना पूरी तरह बंद कर दिया है। बाकी 5 मरीज़ों की निगरानी चल रही है। उक्त दो मरीज़ों के खून में ग्लूकोज़ व इंसुलिन की मात्रा में नाटकीय कमी आई।

सर्जरी *फॉर ओबेसिटी एण्ड रिलेटेड डिसेज़ेज़* में प्रकाशित इन निष्कर्षों से पता चलता है कि डुओडेनम रक्त में ग्लूकोज़

की मात्रा पर नियंत्रण रखने में ज़रूर कुछ भूमिका निभाती है। आम तौर पर माना जाता रहा है कि यह काम पैंक्रियाज़ यानी अग्न्याशय नामक ग्रंथि करती है। इस अध्ययन में शामिल इटली के एक डॉक्टर फ्रांसेस्को रुबिनो का मत है कि हो सकता है कि डुओडेनम कोई ऐसा आणविक संकेत भेजती है जो शरीर को इंसुलिन प्रतिरोधी बनाता है। वयस्क मधुमेह (यानी किस्म-2) में होता यह है कि शरीर में इंसुलिन होता है मगर कोशिकाएं इसका उपयोग नहीं करतीं। लगता है कि डुओडेनम के हट जाने पर यह संकेत मिलना बंद हो जाता है और इंसुलिन अपनी भूमिका निभाने लगता है।

डॉ. रुबिनो के निष्कर्ष की पुष्टि इस बात से भी होती है कि यदि मधुमेह से मुक्त मोटापे से ग्रस्त व्यक्तियों की यह सर्जरी की जाए तो उनके खून में अचानक ग्लूकोज़ की कमी पैदा हो जाती है। बताते हैं कि मेक्सिको, पेरू और भारत में इस तरह की सर्जरी काफी समय से की जा रही है मगर इसे प्रकाशित नहीं किया जाता है। अब इन देशों के अलावा जापान, चीन, यू.एस., इटली, बेल्जियम आदि देशों में भी इस तकनीक के व्यवस्थित परीक्षण शुरू किए जा रहे हैं। (*स्रोत फीचर्स*)

